Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 3 | Dec. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

स्वामी विवेकानंद और उनके स्वप्न का भारत

डॉ. विनयकुमार एस. चौधरी
यषवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंदजी का परिचय शब्दों से देने से शायद शब्दों की ताकद ओछी हो जाएगी । एक युगपुरूष, एक व्रतस्व संन्यासी, अध्यात्मता का 'ओयासिस' राष्ट्रीय भावना का प्रमुख प्रणेता, स्वाभिमान, विद्वता और आत्मविश्वास का उत्तुंग हिमालय, नवभारत का उद्‌गाता और न जाने कुछ....कुछ कल्पना की उडान के परे....। लोकमान्य तिलकजी ने उनका गौरव करते हुए कहा था – 'The Patriot Saint of India' याने भारत का देशभक्त सन्त । सारा भारत उन्हें संस्कृती का अग्रदूत मानकर 'विश्वधर्म ' का बुध्द कहता है। विशुध्द धर्म विचारधारा जग में बहती रहे ऐसा उनका दावा था।

विवेकानंदजी के जीवन पर गहरा अध्ययन करके लाजवाब ढंग से लिखने वाले हिंदी साहित्य के महान विदुष डॉ. नरेंद्र कोहली स्वामीजी के बारें में लिखते हैं– "मेरे मन में भी किसी समय यह शंका थी कि संन्यासी के जीवन में तो केवल ध्यान होगा, तपस्या होगी, साधना होगी, भ्रमण होगा उपदेश होगा। इससे अधिक क्या होगा ?किंतु यह शंका तब तक है जब तक आप स्वामी विवेकानंद के विषय में जानते नहीं है। साधना और तपस्या भी अपने आप में एक यात्रा है । किंतु स्वामीजी के जीवन में और भी बहुत कुछ है। अपने व्यक्तिगत विकास के लिए इच्छा, एक लक्ष्य, ईश्वर तक पहुँचने की इच्छा तथा प्रयत्न, सामाजिक समस्याओं, सांसरिक बंधन, देश की समस्याएँ, अध्यात्म की समस्याएँए राजनीति के कारण उत्पन्न देश, समाज की समस्याओं पर सोचना, तर्क करना, विचार करना, उनका समाधान खोजना, उसके पश्चात् भ्रमण है। इतना वैविध्य है उनके जीवन में। इतने प्रकार के लोगों से मिलना, उनकी समस्याओं के विषय में सोचना। एक व्यक्ति नहीं, वहाँ तो जैसे एक पूरा समाज है, जो संघर्षरत है। बंधनों को पहचानने के लिए और उन बंधनों को तोडने का प्रयास करने के लिए उनसे मुक्ति पाने के लिए, उनसे जूझने के लिए। ऐसे में संन्यासी शब्द के साथ तो एक छबि जुडी हुई है, नीरसता और शुष्कता की, संसार से परे कहीं निष्क्रियता की, ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता है।''

ऐसे महान स्वामी जी का जन्म 12 जनवरी (मकर संक्रान्त) 1863 में 6 बजकर 33मी. में कलकत्ता शहर में हुआ । उनके माता का नाम भुवनेश्वरी था। अपनी माता की वह छठी सन्तान थी । उनका परिवार सुविद्य, सुसंस्कृत और परंपरा संपन्न था। प्रस्तुत 'दत्त मंडली' बंगाली बोलनेवाली, अंग्रेजी लिखनेवाली और उर्दू जाननेवाली थी। स्वामीजी स्वयं बुध्दिवादी और विज्ञाननिष्ठ युवक थे । ज्ञान की अनिवार तृष्णा उनकी आत्मा में विराजमान थी। विद्यार्थी दशा में उन्होंने कालिदास, भवभूति, बायरन, शैली से प्रेरणा पाकर, बुध्द

शंकराचार्य, कॉन्ट और हेगेल तथा मिल्ल और स्पेन्सर को मनःपूर्वक पढा था। कभी ऐश्वर्य संपन्न जीवन का आकर्षण, तो कभी विरक्त जीवन की धारणा उन्हें दोलायमान कर चुकी थी। संयोगवश ऐसे
क्रांतचित्त युवक को उनके महाविद्यालय के प्राचार्य श्रीमान. हेस्टी ने उन्हें स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शागीर्द बनने की सलाह दी । गुरू शिष्य में कभी बनी–बिघडी लेकिन पाँच साल के उदात्त संपर्क के कारण विवेकानंदजी परमहंसजी के वारिस बने। तब से एक नई जीवन प्रणाली उन्हें चुनौती देने लगी।

सन 1886 में जब स्वामी परमहंसजीका देहान्त हुआ तब से वे बेचैन होकर जीवन का सार ढूँढने लगे। उन्होंने तीन सालों तक पूरे भारत का भ्रमण किया और उस भ्रमंतीने उन्हें राष्ट्रनिष्ठा का एक परिणाम प्रदान किया। आखिर में परिव्राजक के रूप में वे भारत का दक्षिण छोर कन्याकुमारी उन्हें मोहवश कर गया। यह वह ऐतिहासिक स्थान निकला कि, जिसने स्वामीजी को जीवन के नये प्रयोजन का दर्शन कराया। धर्मचिंतन के फूल ने उन्हें देशभक्ति का परिमल प्राप्त करा दिया। धर्म का सोपान केवल मोक्षप्राप्ती का साधन है ऐसी उनकी धारणा थी। मगर देशहित और समाजहित मोक्ष से बढ़कर है, ऐसा साक्षात्कार उन्हें होने लगा। उनके मन में यह संयुक्त संकल्पना आकार लेने लगी। धर्म यह आंतरिक दिव्यता की आराधना है और अंगभूत दिव्यत्वताकी पूजा ही सेवा है, ऐसा नया समीकरण उन्हें सचेत करता गया। कन्याकुमारी के शिलाखंडपर उन्हें बोध हुआ कि राष्ट्र ही दैवत है और असकी सर्वांगीन पूजा ही मोक्ष से बढ़कर है। पूरब और पश्चिम यानी अध्यात्म और विज्ञान इनका समन्वय हुए बगैर विश्वकल्याण का 'पसायदान' नहीं हो सकता ऐसा दृढसंकल्प उन्हें कार्यरत करता गया।

विश्वभर के तत्त्ववेत्ताओं ने एक प्रदर्शन का अयोजन किया था। तंत्र विज्ञान की प्रगती का विश्वभर बोलबाला कराना। उसमें एक और विचारधारा की वृध्दी हुयी कि, 'सवधर्म परिषद' का आयोजन भी किया जाए। और कौन रोके ऐसे नविनतम् धारा को? बस! स्वामीजी को सही मौका मिला वे भारत की ओर से हिन्दू धर्म का प्रतिनिधी बनकर, दूत बनकर भारतीय संस्कृती, सभ्यता की महान परंपरा लेकर मार्गस्थ हुए। 11 सितंबर 1893 के शुभ शकून पर परिषद का आयोजन हुआ था। उस सभा में तकरीबन सात हजार निमंत्रित उपस्थित थे। उस परिषद के प्रथम भाषण की शुरूवात 'मेरे प्यारे भाई–बहनों' से की तब वहाँ तालियों की बरसात हुयी। तब से स्वामीजी एक चर्चा का प्रवाह बन गए और बाद में हर भाषण द्वारा 'प्रेषित बन गये। अपनी भाषण शृंखला में उन्होंने हिन्दू तत्वज्ञान की मर्मस्पर्शी सर्व समावेशकता और सहिष्णता का भाव प्रभावकारी कर दिया। थोडे में स्वधर्म पालन और अन्य धर्म का सम्मान उन्होंने मानबिंदू के रूप में प्रेरित किया विश्वधर्म की संकल्पना के जनक वे बन बैठे।

स्वामीजी झुठ के खिलाफ थे वे अपने एक व्याख्यान में कह चूके थे 'झूठ बोलना तलवार की घाव के समान हैं, घाव तो भर जाएगा मगर उसका चिन्ह हमेशा बना रहेगा।' स्वामीजी का कहना था, बल की धाक से हम किसी को आंतकीत कर सकते है, धन के प्रलोभन से हम किसी को उपकृत भी कर सकते है, लेकिन निस्वार्थ प्रेम भाव के बिना हम किसी को जीत नहीं सकते। निस्वार्थ प्रेमभावना भारत के साथ विश्व में भी बहती रहे ऐसा उनका दावा था। क्योंकि पारस्परिक प्रेम ही हमारे तमाम खुशीयों का सरताज हैं।

विवेकानंदजी के हृदय में अपने देश के प्रति निस्सीम प्रेम था। भारत के उज्ज्वल अध्यात्मिक संस्कृति के वे तेजोमान प्रतिनिधि थे। भारतीय संस्कृति विश्व के लिए एक महान पैगाम होगी ऐसा उनका दावा था क्योंकि वेदान्त मानवव्यापी और विश्वव्यापी हो। स्वामीजीने यह पहचाना था कि, विश्व के समस्त धर्म, प्रवाह अध्यात्म के बीना निष्प्राण है इसीलिए उन्होंने ध्यानसाधना, वेदान्त साधना, अध्यात्म, देश–विदेश भ्रमण आदि उपक्रमों को अव्वल स्थान दिया था। उनकी अध्यात्म शक्ति और देशभक्ति अनन्य साधारण थी। प्रथम वे विश्व को बता देना चाहते थे... भारत कैसा है? वेदान्त और अध्यात्म क्या है? आत्मशक्ति और ब्रम्हशक्ति दोनों में कैसा समन्वय है? इस मुल्क की महानता और अनोखापान विदेशीयों को अपने बुलंदी विचारों से सिध्द कराना चाहते थे। ताकि दूरस्थ पश्चिमी भारत को जान सके, मान सके, और समझ सके।

'विश्वधर्म' परिषद ने स्वामीजी को व भारत को 'संस्कृतिसूर्य' के रूप में स्विकृत किया था। विवेकानंद सागर को मथकर ही 'विश्वधर्म' संकल्पना का सार्थ मख्खन बाहर निकल आया। परिषद से लौटते समय लंदन के एक समारोप समारोह में स्वामीजी मातृभूमि के बारे में कह चूके थे–'The Soil of

India is the highest heavan to me.' वहाँ उन्होंने राजयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, रामायण, महाभारत, भारतीय समाज, जीवन और शिक्षा पध्दति ऐसे नानाविध विषयोंपर व्याख्यान दिए थे।

ये रही विदेश की बात परन्तु एक देशभक्त सन्त अपने देश के बारे में सूक्ष्मता से चिंतन कर रहा था कि मेरा देश क्या है? और उसे क्या होना है? उनके मन मस्तिष्क में आधुनिक भारत का एक सुन्दर सपना आकार ले इसलिए उन्होंने अध्यात्मवादीयों को विज्ञाननिष्ठ बनानें का निश्चय किया । उन्होंने भारत में व्यावहारिक वेदान्त (Pratical Vedanta) की अभिनव कल्पना को पुरस्कृत किया। जिसमें जीवन निष्ठा और जीवन मूल्यों का भंडार था। वे देशवाशियों को कहा करते थे... 'हमें शंकराचार्य की बुध्दिमत्ता, भगवान बुध्द की करूणा, इस्लाम का बंधुभाव तथा ख्रिश्चनों की सेवा परायणता चाहिए । '

उत्कट साधना से जन्मा हुआ धर्म विचार उन्होंने सभी के सामने रखा। एक बार स्वामीजी बोले थे–" No man is born to any religion he have a religion in his soul." स्वामीजी हमेशा आचार, विचार व उच्चार तथा त्याग, सेवा, आत्मा की दिव्यता को जीवन का प्रधान अंग मानते थे। तात्पर्य विशुध्द आत्मसत्ता और ब्रहमसत्ता में जो एकरूपता है वह हर इन्सान का शक्ति केंद्र है, आदर्श है।

वे अपने देश को इसी हिसाब से देखते थे और जनजागरण के कार्य में मशगूल हो जाते थे। उनकी आँखो का सपना न केवल सपना था उसे फलद्रव सत्य के रूप में पाने के लिए अहर्निश, अत्याहत और तप भी करते थे । कल का भारत एक ऐसा भारत हो जो विश्व के लिए आदर्शवत और वंदनीय हो। उन्होंने एक सत्यरूप, विज्ञान निष्ठ, सर्वसमावेशक भारत की रचना की थी। जो अध्यात्मता की आत्मशक्ति पर चले और पले। पूरब का वेदान्त , अध्यात्म और पश्चिम का विज्ञान और समाज रचना का सही समन्वय जहाँ हो.. ... ओ मेरा भारत देश ही हो। स्वामीजी अंतर्मुख होकर सोचा करते थे, रचना करते थे, समाज को प्रभावित और प्रवाहित कर देते थे।

वे चाहते थे कि मेरा देश आत्मशक्तिपर चले जिससे आत्मविश्वास बढ़कर कृतिशिलता की नींव डाली जाए। इस दुनिया में जो सत्यरूप है, शाश्वत है, उनका जतन मेरा देश करें। अंधश्रध्दा तथा कुप्रथाओं का शिकार न बनें। संस्कृतिका जतन करनेवाला, मूल्यों का श्वास–उच्छवास करनेवाला, विज्ञानवादी, तंत्रयंत्र पर नूतनतम प्रयोग करनेवाला, धर्म, आत्मा, बंधूभाव, चारित्र्य, सहिष्णुता अहिंसक ऐसी जनता ही देश का उध्दार और कल्याण करके मानव को जिंदा रख सकती है और वह मानव जाती मेरे महान भारत देश में हो ऐसा उनका नवभारत के बारे में सपना था।

संदर्भ संकेत :

1) हितेंद्र यादव : पौराणिक उपन्यास समीक्षात्मक अध्ययन
2) कार्तिकेय कोहली : एक व्यक्ति नरेंद्र कोहली
3) संपा. स्वामी विदेहात्मानंद : स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान
4) राजेंद्र मोहन भटनागर : विवेकानंद जीवनीपरक उपन्यास

!!जयहिंद!!